# भजन

किसी बात की न कमी रही हुआ, जब समय वाणी फजर
ये तेरी मेहेर–२
सब राह माया की भूल कर हमें याद आया अपना घर
ये तेरी मेहर
१ है अखंड न्यामत धाम की, मेरे धनी श्यामा श्याम की
जो गैब खिलवत अपनी है, उसकी हुई तुमसे ख□बर
ये तेरी मेहर
२ हमें खेल में बैठाए के, लेकिन फना से बचाए के
सुन्दर सरूप हो धाम के, रखते सदा हम पर नजर
ये तेरी मेहर
३ कई तुमको ढूंढ फना हुए, नहीं पारब्रह्म को पा सके
जिनको मिला दर्शन तेरा, तो खत्म हुआ उसका सफर
ये तेरी मेहर
४ केती कहूँ मेहरबानियां, लिखी भांत भांत निशानियां
निजधाम दरवाजा खुला, कोई नहीं राखी कसर